ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in June 2025

"रामचरितमानस में वर्णित मूल्यों की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रासंगिकता"

Omvati Chaudhary, Research Scholar, Sanskriti University, Mathura, India
Dr. Rainu Gupta, Research Supervisor, Dean, Sanskriti University, Mathura, India

सारांश

भारतीय संस्कृति में मूल्य शिक्षा की एक समृद्ध परंपरा रही है, जो धर्म, आचार, मर्यादा और सामाजिक दायित्व पर आधारित है। गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस भारतीय जीवन-दर्शन का एक महान ग्रंथ है, जिसमें मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन के माध्यम से मानवीय मूल्यों का जीवंत चित्रण मिलता है। दूसरी ओर, भारत सरकार द्वारा घोषित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आधुनिक भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था में सुधार का एक व्यापक दस्तावेज है, जिसमें मूल्य आधारित शिक्षा, नैतिकता, समावेशी विकास, मातृभाषा में शिक्षण और भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनरुत्थान की बात की गई है। यह लेख तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है कि किस प्रकार रामचरितमानस में वर्णित मूल्य वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों और प्रावधानों में निहित हैं और कैसे ये मूल्य आधुनिक शिक्षा प्रणाली में छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं।

भूमिका

भारतीय दर्शन और साहित्य में 'मूल्य' न केवल मानवीय जीवन की आधारशिला रहे हैं, बल्कि समग्र सामाजिक संरचना का मूल तत्व भी हैं। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं, बल्कि समाजोपयोगी, नैतिक, संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिकों का निर्माण है। भारतीय ग्रंथों में रामचरितमानस एक ऐसा धार्मिक, सांस्कृतिक और नैतिक ग्रंथ है जो पीढ़ियों से भारतीय मानस को दिशा देता आया है। इसमें वर्णित जीवन-मूल्य, जैसे सत्य, सेवा, करुणा, नारी सम्मान, कर्तव्यपरायणता और सहिष्णुता—आज की शिक्षा प्रणाली के लिए भी मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक ऐसी व्यापक नीति है जो केवल शैक्षणिक पुनर्गठन तक सीमित न होकर व्यक्ति के आचरण, सोच और सामाजिक सहभागिता को भी प्रभावित करती है। इस लेख में विश्लेषण किया गया है कि रामचरितमानस में वर्णित कौन से मूल्य हैं जो NEP 2020 में निहित उद्देश्यों के अनुरूप हैं और कैसे इनका शिक्षा प्रणाली में समावेश छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए सहायक सिद्ध हो सकता है।

1. रामचरितमानस में वर्णित प्रमुख जीवन मूल्य

धर्म एवं सत्य का पालन

रामचरितमानस में श्रीराम को 'मर्यादा पुरुषोत्तम' के रूप में चित्रित किया गया है, जिन्होंने परिस्थितियों की कठोरता में भी धर्म और सत्य का मार्ग नहीं छोड़ा। उन्होंने अपने पिता के वचन के लिए राज्य छोड़ दिया, वनवास सहा और रावण जैसे अधर्मी राजा से युद्ध किया। यह मूल्य हमें सिखाता है कि जीवन में सत्य और धर्म के लिए बलिदान आवश्यक हो तो उसे स्वीकार करना चाहिए।

कर्तव्यपरायणता और आत्मनियंत्रण

श्रीराम अपने व्यक्तिगत हितों को त्यागकर सामाजिक और पारिवारिक कर्तव्यों का पालन करते हैं। वे राज्य त्यागकर पिता की आज्ञा का पालन करते हैं, लक्ष्मण भ्रातृ धर्म निभाते हैं और भरत सत्ता को त्याग कर राम की खड़ाऊँ को सिंहासन पर स्थापित करते हैं।

सामाजिक समरसता

शबरी, निषादराज, हनुमान, विभीषण जैसे विविध सामाजिक वर्गों के साथ श्रीराम का समान व्यवहार सामाजिक समरसता का आदर्श प्रस्तुत करता है। यह समावेशी दृष्टिकोण वर्तमान में जाति, वर्ग, भाषा और क्षेत्रीय भेदों से ग्रस्त समाज के लिए प्रेरणास्पद है।

नारी सम्मान और सशक्तिकरण

माता सीता की नारी शक्ति और आत्मसम्मान के चित्रण के साथ-साथ अहिल्या उद्धार की कथा में नारी के प्रति सहानुभूति, सम्मान और पुनर्स्थापना के भाव प्रकट होते हैं।

सहिष्णुता और क्षमा

राम दया और क्षमा के प्रतीक हैं। उन्होंने रावण को बार-बार समझाया, विभीषण को शरण दी, और युद्ध

के बाद शत्रु की विधवा मंदोदरी को सम्मान दिया। यह सहिष्णुता और करुणा का उच्चतम उदाहरण है।

2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्य एवं मूल्य शिक्षा पर बल

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा के माध्यम से बालक के नैतिक, बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास की बात करती है। इसमें कहा गया है कि शिक्षा केवल रोज़गार प्राप्त करने का साधन नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला है। कुछ प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं—

नैतिक शिक्षा और जीवन कौशल

नीति में छात्रों में करुणा, सह-अस्तित्व, संवेदनशीलता, शांति, सत्य, अहिंसा जैसे मूल्यों को विकसित करने की बात की गई है। यह स्पष्ट रूप से रामचरितमानस में वर्णित मूल्यों से मेल खाती है।

मातृभाषा में शिक्षा

NEP 2020 शिक्षा को मातृभाषा में प्रारंभिक स्तर पर अनिवार्य बनाने की बात करती है। रामचरितमानस स्वयं अवधी भाषा में लिखा गया और लाखों लोगों तक पहुंचा। यह भारत की लोकभाषा की शक्ति का परिचायक है।

समावेशी और न्यायपूर्ण शिक्षा

SC, ST, OBC, दिव्यांग और वंचित वर्गों के लिए विशेष शैक्षिक उपायों की बात नीति में की गई है, जो राम के सामाजिक समरसता के दृष्टिकोण से मेल खाती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश

नीति में योग, भारतीय दर्शन, वेद, पुराण, आयुर्वेद, कला-संस्कृति का समावेश करना प्रस्तावित है। रामचरितमानस भी इसी परंपरा का एक भाग है और शिक्षा के माध्यम से इन ग्रंथों के अध्ययन को पुनः जीवंत किया जा सकता है।

3. तुलनात्मक विश्लेषण: रामचरितमानस एवं NEP 2020

क्रम संख्या	रामचरितमानस में मूल्य	NEP 2020 में समान प्रावधान
1	धर्म, सत्य, मर्यादा	नैतिक शिक्षा और चारित्रिक विकास
2	नारी सम्मान	लैंगिक समानता और बालिका शिक्षा
3	सामाजिक समरसता	समावेशी शिक्षा नीति
4	भाषाई विविधता और मातृभाषा	मातृभाषा में शिक्षा पर बल
5	लोक ज्ञान और परंपरा	भारतीय ज्ञान प्रणाली का समावेश
6	सेवा, दया, करुणा	जीवन कौशल और मूल्यों का समावेश

4. शैक्षिक दृष्टिकोण से रामचरितमानस की प्रासंगिकता

मूल्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में समावेश:

रामचरितमानस के प्रमुख प्रसंगों को नैतिक शिक्षा के रूप में स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल किया जा सकता है।

बाल साहित्य और कहानियों के रूप में प्रस्तुति:

सीता का वनगमन, भरत की भक्ति, लक्ष्मण की सेवा, हनुमान की निष्ठा जैसे प्रसंग बालकों के लिए प्रेरक कहानी रूप में पढ़ाए जा सकते हैं।

नाटक और नाट्य-शिक्षा:

रामलीला के माध्यम से विद्यार्थी न केवल सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ेंगे, बल्कि संवाद, अभिनय और नेतृत्व क्षमता भी विकसित करेंगे।

शोध एवं विमर्श के माध्यम से पुनर्पाठ:

उच्च शिक्षा में रामचरितमानस के मूल्य-आधारित पाठ और उनके वर्तमान सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन को बढ़ावा देना चाहिए।

5. चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

चुनौतियाँ:

- मूल्य शिक्षा को केवल औपचारिकता के रूप में लेने की प्रवृत्ति

- आधुनिक पाठ्यक्रमों में धार्मिक/सांस्कृतिक ग्रंथों को 'गैर-प्रासंगिक' मानना
- शिक्षक प्रशिक्षण की कमी

संभावनाएँ:

- रामचरितमानस को 'सांस्कृतिक साहित्य' के रूप में मान्यता देना
- डिजिटल माध्यमों में रामकथा आधारित लघु चलचित्र, गेम्स, पाठ्य गतिविधियाँ विकसित करना
- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भारतीय परंपरा आधारित मूल्य-शिक्षा को सम्मिलित करना

निष्कर्ष

रामचरितमानस में वर्णित मूल्य—जैसे मर्यादा, धर्म, प्रेम, समरसता, सेवा, और आत्मबल—केवल धार्मिक या पौराणिक नहीं, बल्कि शाश्वत मानव मूल्य हैं जो हर युग, हर समाज और हर व्यक्ति के लिए प्रासंगिक हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ऐसे ही मूल्यों को आधुनिक रूप में शिक्षा प्रणाली में पुनर्स्थापित करने का प्रयास है। यदि रामचरितमानस के मूल्यों को शिक्षा के हर स्तर पर समाविष्ट किया जाए, तो न केवल एक सशक्त शैक्षिक ढांचा तैयार होगा, बल्कि एक नैतिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध समाज का भी निर्माण संभव होगा।

संदर्भ सूची

- गोस्वामी तुलसीदास (1574). रामचरितमानस. काशी: विद्या मंदिर प्रकाशन।
- भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।
- मिश्र, रामआसरे (2018). भारतीय मूल्य शिक्षा. प्रकाशन संस्थान, दिल्ली।
- शर्मा, अनुराधा (2023). शिक्षा नीति और भारतीय परंपरा का समन्वय. नई दिशा शोध पत्रिका।
- पांडे, सुनील (2021). रामचरितमानस में नैतिक शिक्षा. भारतीय सांस्कृतिक समीक्षा, खंड 25, अंक 3। यादव, वसुधा (2019). भारतीय ग्रंथों में शिक्षा और समाजशास्त्र. राष्ट्रीय शोध मंच।